वार्षिक प्रतिवेदन

2017-18

डा० राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, (समस्तीपुर), बिहार - 848125

वार्षिक प्रतिवेदन

(2017-18)

डा० राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय

पूसा, (समस्तीपुर), बिहार - 848125

वार्षिक प्रतिवेदन
2017—18

संरक्षक : **डॉ. आर. सी. श्रीवास्तव**
कुलपति, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

संकलन और संपादन : **डॉ. एम. एन. झा**
निदेशक, शिक्षा
डॉ. पी. के. झा
प्राध्यापक, पादप– रोग विज्ञान
डॉ. शंकर झा
सहायक प्राध्यापक, मृदा विज्ञान

वैज्ञानिक हिंदी अनुवाद एवं संपादन :
डॉ. राकेश मणि शर्मा
विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष
श्री गुप्तनाथ त्रिवेदी
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष

सहयोग : **श्री अजय कुमार सिंह**
सहायक

तकनीकी सहयोग : **श्री मनीष कुमार**
पुस्तकालय सहायक

प्रकाशन प्रभार : प्रकाशन प्रभाग, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, (समस्तीपुर), बिहार – 848125

मुद्रण : **के. जी. इन्टरप्राईजेज**
महेन्द्रू, पटना–6

डॉ० राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार

वर्ष 2017–18 की अवधि में डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा की समीक्षा

पृष्ठभूमि

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा की स्थापना भारत सरकार के आधिकारिक राजपत्र अधिसूचना द्वारा तत्कालीन राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, बिहार, पूसा को एक केंद्रीय विश्वविद्यालय में परिवर्तित कर की गई थी जो 7 अक्टूबर 2016 से प्रभावी हुआ था, जिसे कृषि के विकास, कृषि और संबद्ध विषयों में अनुसंधान में गति प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया। कृषि एवं संबद्ध विषयों के शिक्षण, अनुसंधान और प्रसार शिक्षा के कार्यक्रमों के संबंध में विश्वविद्यालय का अधिकार क्षेत्र और उत्तरदायित्व पूरे देश में तथा बिहार राज्य के विशेष संदर्भ में है।

उपलब्धियाँ

विश्वविद्यालय कृषि और संबद्ध विषयों में शिक्षण, अनुसंधान और प्रसार के लिए एक उत्कृष्ट संस्थान बनने के उद्देश्य के साथ आगे बढ़ रहा है, जो राज्य के कृषक समुदाय के साथ–साथ देश में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए कार्य करती है, साथ हीं कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में एक बौद्धिक एवं ताकतवर श्रमशक्ति का निर्माण अनुसंधान और प्रसार क्षेत्र में सतत विकास को बढ़ावा, लोगों के जीवन स्तर एवं पोषण की गुणवत्ता में सुधार, कृषि जरूरतों को पूरा करने के लिए एक एकीकृत मंच एवं विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों तथा कृषक समुदाय के साथ–साथ संबद्ध उद्योगों के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करती है ।

विश्वविद्यालय कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के 05 विषयों में स्नातक कार्यक्रम, 19 विषयों में स्नातकोत्तर कार्यक्रम और 09 विषयों में पी.एच.डी. कार्यक्रम चलाती है। वर्ष 2017–18 के दौरान विश्वविद्यालय के विभिन्न यूजी, पीजी और पीएचडी कार्यक्रम में कुल 282 छात्रों को प्रवेश दिया गया था। विश्वविद्यालय ने UG कार्यक्रम में 5^{th} Deans समिति की रिपोर्ट को पूरी तरह से लागू कर दिया है। विश्वविद्यालय में छात्रावास सुविधाओं की बेहतरी, सॉफ्ट स्किल विकसित कर मजदूरी/रोजगार में वृद्धि हेतु प्लेसमेंट इकाई को पूरी तरह से क्रियान्वित किया गया। पुस्तकालय सुविधाओं में गुणात्मक वृद्धि एवं स्वचालन की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

इस विश्वविद्यालय अन्तर्गत 37 ए.आई.सी.आर.पी. 04 अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाएं, 15 एडहॉक परियोजनाएं, 17–बिहार सरकार द्वारा पोषित परियोजनायें तथा विश्वविद्यालय में आंतरिक श्रोतों के माध्यम से 29 परियोजनायें चल रही है। विश्वविद्यालय द्वारा गन्ना (राजेंद्र गन्ना –1), अरहर (राजेंद्र अरहर –1), गेहूं (राजेंद्र गेहूं –1), एरोबिक

धान (राजेंद्र नीलम), कौनी (राजेंद्र कौनी –1) की किस्म विकसित की गई है। धनिया (प्रविष्टि RD 385) को विश्वविद्यालय के अनुसंधान परिषद की बैठक द्वारा राजेंद्र धनिया –1 के रूप में नामित किया गया जिसे प्रदेश / देश हेतु जारी करने की सिफारिश की गई।

विश्वविद्यालय छोटे और सीमांत किसानों की आवश्यकता के अनुसार प्रौद्योगिकी विकसित करने और चुनौतीपूर्ण पारिस्थितिकी की समस्याओं से निबटने के लिए सभी तरह का प्रयास कर रहा है। चुनौतीपूर्ण पारिस्थितिकी यानी ढाब, ताल, चौर के लिए नाव आधारित सौर सिंचाई प्रणाली का विकास, सीमांत किसानों के लिए ड्रम आधारित सिंचाई प्रणाली (लघु सिंचाई यंत्र) का विकास, मृदा टर्नर का डिजाइन एवं निर्माण, महिलाओं के इस्तेमाल के अनुकूल मक्का शेलर का विकास, लघु और सीमांत किसानों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के अनुकूल प्रौद्योगिकियों का विकास किया गया है यथा – मशरुम, क्रॉस ब्रेड बकरी, मधु, गुर, दाल और मसालों की ग्राम स्तरीय प्रसंस्करण इकाई, आदि महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियॉ मील के पत्थर साबित हुए हैं तथा कृषक समुदाय की अर्थव्यवस्था को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं।

विश्वविद्यालय के अन्तर्गत किसानों और अन्य हितधारकों के बीच प्रौद्योगिकी के प्रभावी हस्तांतरण हेतु प्रसार शिक्षा निदेशालय,12 कृषि विज्ञान केन्द्र, एटिक सेल, किसान कॉल सेंटर, एग्रोमेट सलाहकार सेवा आदि पर्याप्त बुनियादी ढांचे एवं कुशल प्रणाली विकसित की गई है जो किसानों एवं अन्य हितधारको के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन, फ्रंट लाइन प्रदर्शन, किसान मेला, किसान गोष्ठी, समाचार पत्र तथा स्थानीय पत्रिका, रेडियो / टीवी वार्ता और सामुदायिक रेडियो स्टेशन, मोबाइल ऐप आधारित सलाहकार सेवा / लेखों का प्रकाशन आदि का आयोजन करती है। वर्ष 2017–18 में विश्वविद्यालय ने 41500 प्रसिक्षु को प्रशिक्षित किया है जिसमें किसानों, ग्रामीण युवाओं और कृषि क्षेत्र की महिलाओं को शामिल किया गया। इसके अलावे 3500 FLD और 60 OFT आयोजित किए गए।

विश्वविद्यालय ने शिक्षक एवं छात्रों को आदर्श शैक्षणिक वातावरण प्रदान करने के लिए परिसर में शैक्षणिक गतिविधियों के बुनियादी ढांचे का आधुनिकीकरण शुरू किया गया है। यूजी, पीजी एवं पी.एच.डी. की सभी कक्षाओं को स्मार्ट क्लास रूम में परिवर्तित किया गया। विश्वविद्यालय में फ्लेक्स हाउस के नवीनीकरण एवं आधुनिकीकरण, परिसर की सड़कों के विद्युतीकरण तथा सौंदर्यीकरण, शैक्षणिक परिसर, प्रयोगशाला, क्लास रूम, हॉस्टल और आवासीय भवन का नवीनीकरण का कार्य प्रगति पर है।

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के द्वारा वर्ष के दौरान 41 राष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार अर्जित किया गया। साथ हीं 187 शोध लेख, 5–पुस्तकें और 10 पुस्तक अध्याय प्रकाशित किए हैं। सभी वैधानिक निकाय अर्थात अध्ययन मंडल, अकादमिक परिषद, अनुसंधान परिषद, विस्तार परिषद और प्रबंधन बोर्ड का गठन किया गया है।

डॉ० राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार

संसद में वर्ष 2017–18 के लिए वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुति में विलम्ब का कारण

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, बिहार, पूसा, समस्तीपुर के संदर्भ में वर्ष 2017–18 की वार्षिक रिपोर्ट संसद के दोनों सदनों में रखी जानी थी। विदित हो कि विश्वविद्यालय का राज्य स्तरीय विश्वविद्यालय से केंद्रीय विश्वविद्यालय में परिवर्तन 7 अक्टूबर, 2016 से प्रभावी था। केन्द्रिय विष्वविद्यालय में परिवर्तन के पूर्व राज्य सरकार के प्रारूप पर रिपोर्ट तैयार की जाती थी। परन्तु केन्द्रीय विष्वविद्यालय में परिवर्तन के पष्चात् केन्द्र सरकार के अनुरूप कार्य संस्कृति में बदलाव के साथ–साथ रिपोर्टिंक प्रारूप में बदलाव आया। फलस्वरूप नये प्रारूप के अनुरूप रिपोर्टिंग में विलम्ब हो गया। अब रिपोर्ट तैयार होने के पष्चात प्रबंधन बोर्ड द्वारा इसे अनुमोदित कर दिया गया है और माननीय कुलाध्यक्ष के समक्ष अवलोकन हेतु प्रस्तुत किया गया है।

संसद में वर्ष 2017–18 के लिए वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करने में विलम्ब सम्बन्धी कारण का विन्दूवार विवरण नीचे दिया गया है :–

विश्वविद्यालय के प्रबंधन बोर्ड द्वारा अनुमोदन के लिए वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करना	26.05.2020
प्रबंधन बोर्ड द्वारा वार्षिक रिपोर्ट की स्वीकृति	12.06.2020
कुलाध्यक्ष की मंजूरी के लिए वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करना	25.08.2020
कुलाध्यक्ष की स्वीकृति की प्राप्ति	05.02.2021
संसद के पटल पर प्रस्तुत करने हेतु वार्षिक प्रतिवेदन की मुद्रित प्रतियों को कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग को समर्पित करना	

कुलपति से प्राक्कथन

विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड की गई विस्तृत प्रतिवेदन के साथ विश्वविद्यालय की समग्र गतिविधियों और मुख्य उपलब्धियों की झलकियों को वार्षिक प्रतिवेदन–2017–18 के संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करना मेरे लिए गौरवपूर्ण क्षण है। विश्वविद्यालय राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय उच्च संस्थानों के समरूप उसके बौद्धिक एवं श्रमशक्ति का निर्माण करके कृषि और संबद्ध शाखाओं के शिक्षण, अनुसंधान एवं प्रसार में एक उत्कृष्ट संस्थान बनने के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रहा है। हम 5वीं अधिष्ठाता की समिति की प्रतिवेदन को लागू करके स्नातक के 05 विषयों में, स्नातकोत्तर कार्यक्रम 19 विषयों में और पीएचडी कार्यक्रम के 09 विषयों में उच्च शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। वर्ष 2017–18 के दौरान, विश्वविद्यालय के विभिन्न स्नातक, स्नातकोत्तर, और पी.एच.डी. पाठ्यक्रमों में कुल 282 छात्रों को प्रवेश दिया गया था। विश्वविद्यालय ने छात्रावास सुविधाओं के उन्नयन, प्लेसमेंट सेल के पुनरुद्धार, पुस्तकालय सुविधाओं के उन्नयन और स्वचालन कीदिशा में अनूठी पहल है। विश्वविद्यालय में 37 अखिल भारतीय समन्वयन अनुसंधान परियोजनाएँ, 4 विदेशी परियोजना, 15 तदर्थ परियोजनाएं, 17 बिहार सरकार की परियोजनाएं, 29 विश्वविद्यालय परियोजनाएं एवं अन्य एजेंसियों की 7 परियोजनाओं के माध्यम से बिहार के विभिन्न जलवायु क्षेत्रो में रहने वाले विभिन्न सामाजिक आर्थिक समूहों के किसानों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए विभिन्न फसल किस्मों और प्रौद्योगिकीयो को विकसित करने हेतु अनुसन्धान कार्य कर रहा है।

केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय की आवश्यकता के अनुसार विश्वविद्यालय ने अपने कार्यकारी निकायों जैसे प्रबंधन मंडल, अनुसंधान परिषद, प्रसार शिक्षा परिषद, विद्वतपरिषद, वित्त समिति और विभिन्न महाविद्यालयोंके अध्ययन के बोर्ड इत्यादिका गठन किया है।

कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर), भारत सरकार द्वारा कर्मचारियों की संरचना के पुनर्गठन और युक्तिकरण के लिए एक उच्चस्तरीय शक्ति समिति का गठन किया गया है जो एक आदर्श केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के लिए एक बेंचमार्क भी निर्धारित करेगा।

मैं भारत के माननीय राष्ट्रपति विश्वविद्यालय के कुलाध्यक्ष महामहिम श्री रामनाथ कोविंद जी, प्राध्यापक पी.के. मिश्रा, विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति और श्री राधा मोहन सिंह जी, माननीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार के असीम समर्थन और मार्गदर्शन के लिए सादर आभार प्रकट करता हूँ। मैं डॉ. टी. महापात्रा,सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग, (डेयर), कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार को उनके प्रोत्साहन और समर्थन के लिए मैंबहुत–बहुत आभारी हूँ।

मैं प्रतिवेदन तैयार करने में बहुमूल्य जानकारी उपलब्ध कराने के लिए सभी अधिष्ठाताओं, निदेशकों, कुलसचिव, विभाग के प्रमुखों, परियोजनाओं के प्रधान अन्वेषकों, कृषि विज्ञान केन्द्रों केवैज्ञानिकों एवंशिक्षकों और अन्य प्रशासनिक, तकनीकी और सहायक कर्मचारियों की सराहना करता हूं।

(रमेशचन्द्र श्रीवास्तव)
कुलपति

सारांश

7 अक्टूबर 2016 को डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा की स्थापना तत्कालीन राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, बिहार, पूसा को भारत सरकार के आधिकारिक राजपत्र अधिसूचना द्वारा केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में परिवर्तित कर दी गयी जिसे कृषि विकास के लिए कृषि और संबद्ध विज्ञानों में उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया। कृषि और संबद्ध विषयों के शिक्षण, अनुसंधान और प्रसार शिक्षा के कार्यक्रमों के संबंध में विश्वविद्यालय का अधिकार क्षेत्र और जिम्मेदारी पूरे देश में विस्तारित है तथा बिहार राज्य के विशेष संदर्भ में है।

विश्वविद्यालय कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में 05 विषयों में स्नातक कार्यक्रम, 19 विषयों में स्नातकोत्तर कार्यक्रम एवं 09 विषयों में पीएचडी कार्यक्रम चलाता है। वर्ष 2017–18 के दौरान, विश्वविद्यालय के विभिन्न यूजी, पीजी और पीएचडी कार्यक्रमों में 282 छात्रों को प्रवेश दिया गया था। विश्वविद्यालय ने यूजी कार्यक्रम में 5 वीं अधिष्ठाता समिति की रिपोर्ट को पूरी तरह से लागू किया है। विश्वविद्यालय ने छात्रावास सुविधाओं के उन्नयन, प्लेसमेंट इकाई के पुनरुद्धार के साथ–साथ पुस्तकालय सुविधाओं का उन्नयन और स्वचालन किया है। विश्वविद्यालय अन्तर्गत 37 अखिल भारतीय परियोजनाओं, 4 विदेशी परियोजनाओं, 15 तदर्थ परियोजनाओं, 17 राज्य सरकार परियोजनाओं, 29 विश्वविद्यालय परियोजनाओं और अन्य एजेंसियों की 7 परियोजनाओं के माध्यम से अनुसन्धान का कार्य चल रहा है।

वर्ष के दौरान, विश्वविद्यालय ने विभिन्न फसलों का उन्नत प्रभेद गन्ना (राजेंद्र गन्ना –1), अरहर (राजेंद्र अरहर –1), गेहूँ (राजेंद्र गेहूं –1), एरोबिक धान (राजेंद्र निलम), फॉक्सटेल (राजेंद्र कौनी –1), धनिया की किस्म (राजेंद्र धनिया –1) के रूप में नामित कर विश्वविद्यालय के अनुसंधान परिषद की बैठक द्वारा जारी करने की सिफारिश की गई है।

विश्वविद्यालय छोटे और सीमांत किसानों की आवश्यकताओं के अनुसार प्रौद्योगिकियों को विकसित करने और चुनौतीपूर्ण पारिस्थितिकी की समस्याओं को दूर करने के लिए सभी प्रयास कर रहा है। लघु और सीमांत किसानों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के अनुकूल प्रौद्योगिकियां, सीमांत किसानों के लिए ड्रम आधारित सिंचाई प्रणाली (लघु सिंचाई यंत्र) का विकास, मिट्टी के टर्नर का डिजाइन और निर्माण, महिलाओं के अनुकूल मक्का शेलर का विकास, मशरूम, ग्राम स्तर की प्रसंस्करण इकाई (शहद, गुड़, दाल और मसाले) इत्यादि का विकास, वर्ष के दौरान कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं जो किसान समुदाय की आर्थिक स्थिति को मजबूत करेंगे। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2017–18 के दौरान राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के 41 पुरस्कार अर्जित किए।

विश्वविद्यालय के बारे में

07 अक्टूबर, 2016 को स्थापित, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (1970) और कृषि अनुसंधान संस्थान और कॉलेज, पूसा (1905) की विरासत है। विश्वविद्यालय, कृषि और संबद्ध विषयों के क्षेत्र में शिक्षण, अनुसंधान और प्रसार के संबंध में विश्वविद्यालय का अधिकार क्षेत्र और जिम्मेदारी पूरे देश में विस्तारित होने के साथ–साथ बिहार राज्य के विशेष संदर्भ में है।

लक्ष्य (Mission) :

अनुभव आधारित उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षण हेतु वातावरण निर्माण को बढ़ावा देना जो मिट्टी–पौधे–पशु–मानव के बीच अंतर एवं सामाजिक–आर्थिक और पर्यावरणीय महत्व की समझ विकसित करता है।

नवोंनमेषी केंद्रित शिक्षा, अत्याधुनिक अनुसंधान, उद्यमशीलता/स्टार्ट अप कौशल विकास और उपयुक्त कृषि प्रौद्योगिकी के प्रसार के माध्यम से कृषि हितधारकों को आत्मनिर्भर बनाने में सहयोग करना।

अग्रणी अनुसंधान और विकास के हस्तक्षेप से राष्ट्रीय/वैश्विक आवश्यकताओं के अनुरूप खाद्य उत्पादन।

पूर्वी भारत में जलवायु परिवर्तन के अनुरूप कृषि एवं उत्पादकता बढ़ाकर कृषि भूमि पर दबाव कम करना।

भाविष्यिक–दृष्टिकोण (Vision)

क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक जरूरतों को पूरा करने, किसानों की सम्मानित आजीविका के लिए विशेष सेवाएं प्रदान करने, नैतिक मूल्यों के साथ कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में शिक्षा, अनुसंधान और उद्यमशीलता में उत्कृष्टता को आगे बढ़ाने के लिए व्यावसायिक योग्यता को बढ़ाना।

अधिदेश (Mandate) :

- कृषि और संबद्ध क्षेत्रों की विभिन्न शाखाओं में शिक्षा प्रदान करना।
- कृषि और पशु उत्पादों की उत्पादकता और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकियाँ विकसित करने हेतु बुनियादी, रणनीतिक और व्यवहारिक अनुसंधान करना।
- किसानों में वैज्ञानिक जानकारी का प्रसार करना।
- आधार और प्रमाणित बीजों के उत्पादन एवं गुणन के लिए प्रजनक बीजों की आपूर्ति में राज्य सरकार की मदद करना।
- कृषि अनुसंधान और उद्योगों, गैर सरकारी संगठनों और अन्य लोगों के लिए अनुसंधान और विकास हेतु परामर्श सेवाएं और विशेषज्ञता प्रदान करना।.

उद्देश्य

- कृषि एवं संबंद्व विज्ञानों के विभिन्न शाखाओं में शिक्षा प्रदान करना।
- कृषि अनुसंधान एवं संबंद्वविज्ञान में अनुसंधान संचालित करना एवं उच्च अध्ययन की व्यवस्था।
- बिहार राज्य को ध्यान में रखते हुए प्रसार शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रमों को आयोजित करना।
- राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय संस्थानों के साथ हिस्सेदारी एवं संबंद्वता को बढ़ावा करना।
- समय समय पर उपरोक्त कार्यों के अतिरिक्त अन्य गतिविधि को निर्धारित करना।
- कृषि शिक्षा एवं सबंद्व विज्ञान में गुणवत्ता एवं किसानों के जीवनस्तर को समृद्ध करना।

प्रतिवेदन का महत्वपूर्ण क्षेत्र

1. हरखेत को पानी।
2. बूँद एक–पौधें (फसल) अनेक।
3. किसानों की आय दुगूनी करना।
4. मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन।
5. दलहन के उत्पादन को बढ़ाना।

कार्यकारी परिषद

1. प्रबंध समिति
2. अनुसंधान परिषद
3. शिक्षा प्रसार परिषद
4. विद्वत परिषद

विश्वविद्यालय प्रशासन

कुलाध्यक्ष	:	श्री रामनाथ कोविंद, माननीय राष्ट्रपति, भारतवर्ष
कुलाधिपति	:	प्रो. पी. के. मिश्रा
कुलपति	:	डा. रमेश चन्द्र श्रीवास्तव
रजिस्ट्रार	:	डा. रविनंदन
निदेशक अनुसंधान	:	डा. मिथिलेश कुमार
निदेशक प्रसार शिक्षा	:	डा. के. एम. सिंह
निदेशक शिक्षा	:	डा. मदन सिंह

महाविद्यालय के अधिष्ठाता

डा. एस. के. वार्ष्णेय	: अधिष्ठाता (कृषि), रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर
डा. एस. पी. सिंह	: अधिष्ठाता, आधार विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय, रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर
डा. (श्रीमति) मीरा सिंह	: अधिष्ठाता, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर
डा. एल. एम. यादव	: अधिष्ठाता, पंडित दिन दयाल उपध्याय, महाविद्यालय, (पिपरा कोठी, मोतिहारी), रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर
डा. आर. एस. वर्मा	: अधिष्ठाता, कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय, रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर
डा. ,स. सी. राय	: अधिष्ठाता, मत्स्यकी महाविद्यालय, ढ़ोली, रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर
डा. देवेन्द्र सिंह	: अधिष्ठाता, तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढ़ोली, रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर
डा. के. एम. सिंह	: निदेशक, कृषि व्यवसाय एवं ग्रामीण प्रबंधन विद्यालय, रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर

निदेशक, छात्र कल्याण : डॉ. ए.के. मिश्रा
निदेशक, योजना : डॉ. (श्रीमती) आरती सिन्हा
नियंत्रक : श्री राधा कृष्ण प्रसाद

प्रमुख उपलब्धियाँ

शिक्षा

विश्वविद्यालय कृषि एवं इससे संबंद्ध क्षेत्रों के 05 विषयों में स्नातक कार्यक्रम, 19 विषयों में स्नातकोत्तर एवं 09 विषयों में पी. एच. डी. कार्यक्रमों में शिक्षा प्रदान कर रहा है। अखिल भारतीय स्तर पर आई. सी. ए. आर. एवं ए. आई. जे. ई. ई. के माध्यम से प्रवेश परीक्षा अयोजित कर स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पी. एच. डी. कार्यक्रमों में विद्यार्थियों का नामांकन किया जाता है। विश्वविद्यालय 05वीं अधिष्ठाता समिति प्रतिवेदन के क्रियान्वयन के आधार पर स्नातक पाठ्यक्रम के शिक्षा के गुणवत्ता में विकास करने का प्रयास कर रही है। नये छात्रावासों का विस्तार एवं अन्य छात्रावासों का जिर्णोधार, चाहरदिवारियों का निर्माण, विश्वविद्यालय अंतर्गत विभिन्न सड़कों का निर्माण, विद्यार्थियों के लिए परिसर प्लेसमेंट ईकाई, श्रमिकों के कार्य कुशलता के लिए रोजगार से संबंधित कार्यक्रम इत्यादि महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित किए गये। 2017–18 में छात्रों की कुल प्रवेश क्षमता के अनुरूप स्नातक कार्यक्रम में 165 छात्र,(100%), स्नातकोत्तर कार्यक्रम में 99 छात्र (81%) एवं पी.एच. डी. कार्यक्रम में 18 (67%) विद्यार्थीयों ने अपना नामांकन कराया तथा पुराने विद्यार्थीयों में स्नातक (79%), स्नातकोत्तर में (75%) और पी.एच.डी. कार्यक्रम में 37% विद्यार्थीयों ने पुनर्नामांकन किया। विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2017–2018 में स्नातक के 90 विद्यार्थियों, स्नातकोत्तर के 52 विद्यार्थियों एवं पी. एच. डी. के 08 विद्यार्थियों को उपाधियाँ दी गई। स्नातक एवं स्नातकोत्तर के 10 विद्यार्थियों को जे.आर.एफ., एस.आर.एफ. एवं गेटं आदि परीक्षा में सफलता मिली तथा कृषि व्यवसाय प्रबंधन के 90 प्रतिशत विद्यार्थियों को विभिन्न कम्पनियों में चयनित किया गया।

स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पी. एच. डी. कार्यक्रमों के लिए कुल विद्यार्थियों की एक झलक

पाठ्यक्रम का नाम	कुल क्षमता	नामांकित		रूके रहे		उत्तीर्ण हुए
स्नातक	165	165	100 प्रतिशत	130	79 प्रतिशत	90
स्नातकोत्तर	122	99	81 प्रतिशत	91	75 प्रतिशत	82
पी. एच. डी.	27	18	67 प्रतिशत	10	37 प्रतिशत	08

अनुसंधान

भिन्न–भिन्न सामाजिक और आर्थिक समूह के किसानों की आवश्यताओं एवं विभिन्न कृषि जलवायु की परिस्थितियाँ को ध्यान में रखते हुए विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं के माध्यम से सभी फसल प्रजातियों एवं तकनीकों के विकास हेतु विश्वविद्यालय हर संभव प्रयास कर रहे हैं।

विश्वविद्यालय में संचालित अनुसंधान परियोजनाओं की झलक

क्रम सं.	वित्तपोषित एजेंसियों एवं परियोजनाओं का नाम	परियोजनाओं की संख्या
1	अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना,	37
2	विदेश सम्पोषित परियोजना,	04
3	तदर्थ अनुसंधान परियोजना,	15
4	बिहार सरकार की परियोजना,	17
5	विश्वविद्यालय की परियोजना,	29
6	अन्य अभिकरण	07

फसल सुधार कार्यक्रम

विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों के लिए अधिक उपज देने वाली फसलों जैसे दलहन, तेलहन, मक्का, धान आदि फसलें के विकास एवं सुधार में विश्वविद्यालय अग्रणी भूमिका निभाता आ रहा है। वर्ष 2017–18 में कुल 2561 जर्मप्लास्म का रखरखाव किया गया। । इसके अतिरिक्त 1440 नएजर्मप्लास्म विश्वविद्यालय के जीन बैंक में जोड़े गए। इस अवधि में लगभग 453 क्विंटल प्रजनन बीज उत्पादितकिया गया जो विश्वविद्यालय द्वारा फसल विकास/सुधार की दिशा में किये गए कार्यो के प्रति दृढ इच्छाशक्ति को दर्शाता है।

विकसित फसल प्रजातियॉं

फसल प्रजातियॉं जैसे राजेन्द्र गन्ना–1, राजेन्द्र अरहर–1, राजेन्द्र गेहूँ–1, राजेन्द्र नीलम–1, फौक्स टेल (राजेन्द्र कौनी), धनियाँ (राजेन्द्र धनिया–1) विकसित किए गए जिसे जारी करने हेतु विश्वविद्यालय की अनुसंधान परिषद की बैठक में अनुशंसित किया गया है।

Fig.: Field Visit of variety release committee

Fig.: Field Visit of Hon'ble Vice-Chancellor

Field view of state vrietal trial Wheat and Sugarcane

a. किस्मे जारी करने वाली समिति का प्रक्षेत्र भ्रमण

b. माननीय कुलपति जी का प्रक्षेत्र भ्रमण

c. गेहूं और गन्ने का राज्यस्तरीय किस्म परीक्षण प्रक्षेत्र

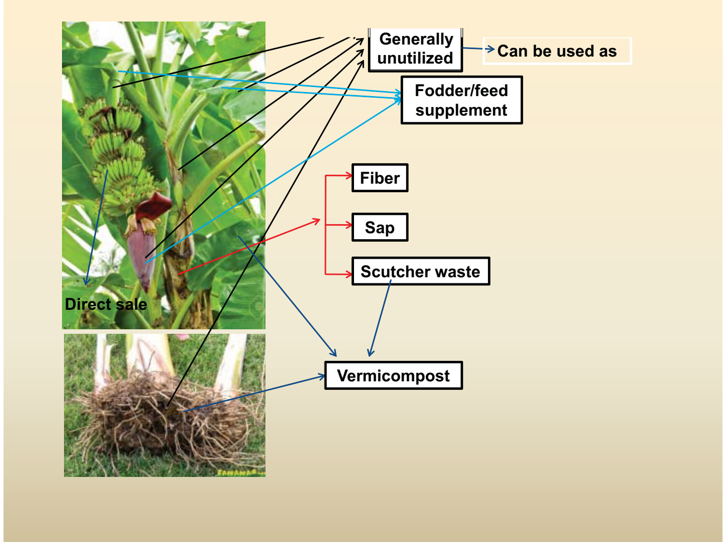

अनुसंधानिक पहल

केला खेती द्वारा आत्म निर्भरता माड्ल का विकास

राज्य में केला को मुख्य फल फसल के रूप में देखते हुए विश्वविद्यालय द्वारा अपने आंतरिक स्रोतों से केला खेती द्वारा आत्मनिर्भरता मॉडल का विकास हेतु परियोजनाएँ चलाई जा रही है। इस परियोजना का उद्देश्य स्यूडो स्टेम से फाइबर, पल्प और सैप रोहन प्रकिया का मानकीकरण तथा केला उत्पादन हेतु आधुनिक सिचाई विकसित करना है, साथ ही इस फसल के विभिन्न अवयवों को पशुओं के आहार संभावनाओं को तलाशना है। यह परियोजना केला उत्पादकों को आत्मनिर्भर बनाने तथा कृषि क्षेत्र के अन्य उद्यमियों एवं उद्योगों के विकास में मार्ग दर्शक की भूमिका निभा सकती है।

ढ़ाब भूमि विकास कार्यक्रम

बूढ़ी गंडक नदी के किनारे 250 एकड़ ढ़ाब भूमि विश्वविद्यालय परिसर के अधीन है। इसका 80 प्रतिशत से अधिक भूमि किसी भी उद्देश्य के लिए उपयोग में नहीं है। इस भूमि को खेती योग्य बनाने के लिए ढाब भूमि विकास कार्यक्रम

Crop in *Dhab* land

क्रियान्वित किया गया है। तदनुसार इस कार्य हेतु आधारभूत संरचना विकसित की गई है। ढ़ाब/दियारा भूमि के लिए विकसित फसल प्रणाली की सफलता इस क्षेत्र के वंचित किसान समुदायों के लिए वरदान साबित होगी जो पूरे राज्य में 1.5 मिलियन हेक्टेयर में फैला हुआ है।

सिंचाई हेतु सौर वृक्ष

दियारा जैसे क्षेत्र जहॉ लगातार बाढ़ की वजह से विधुतीकरण करना संभव नहीं होता है, वैसे क्षेत्रो मेंबिजली की कमी से किसान उच्च कीमत पर पम्पिंग सिंचाई प्रणाली द्वारा खेतों की सिंचाई के लिए बाध्य हो जाते हैं। ऐसे क्षेत्रो की कम जलधारण क्षमतावाली प्राकृतिक भूमि को लगातार सिंचाई की आवश्यकता होती है। इन क्षेत्रो में सौर ऊर्जा वृक्ष आधारित सिंचाई प्रणाली जो 20 प्रतिशत अधिक क्षमता पर काम करता है, डीजल पम्प आधारित सिंचाई का वैकल्पिक साधन मुहैया कराता है। सिंचाई के लिए पानी में रहने वाले पम्प (सबमर्सिबल पम्प) को भी इससे संचालित कर सिंचाई की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। इस क्षेत्र के वर्तमान परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए दबाव सिंचाई प्रणाली को उपयोग में लाने एवं अनुकूल वातावरण तैयार करने में यह एक वैकल्पिक व्यवस्था के रुप में स्वीकृत किया गया है। इस प्रकार ढ़ाब क्षेत्र में सिंचाई

एवं स्ट्रीट लाइट हेतु बिजली आपूर्ति व्यवस्था को सुनिश्चित करने के लिए विश्वविद्यालय अंतर्गत 08 सौर वृक्ष संचालित हैं। ग्रीन ऊर्जा हेतु विश्वविद्यालय के विभिन्न भवनों के ऊपर 400 के. डब्लू. पी. क्षमता वाले सौर उर्जा प्रणाली की व्यवस्था की गई है।

लघु सिंचाई यंत्र

ऐसे दियारा क्षेत्र, जहॉ सीमांत किसान सब्जी उत्पादन तो करते हैं परन्तु सिंचाई के लिए ज्यादा कीमत वहन नहीं कर सकते, वहॉ के लिए लघु सिंचाई प्रणाली विकसित की गयी है। पोर्टेबुल सिंचाई प्रणाली की मदद से वे करीब 200 लीटर पानी अपने खेतों में पहॅुचा कर सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली से अपने खेतों की सिंचाई कर सकते हैं।

प्रसार

विश्वविद्यालय ने किसानो व अन्य हितधारकों के बीच प्रभावी तकनीकी हस्तांतरण हेतु अपने प्रसार शिक्षा निदेशालय के आधारभूत संरचना को पर्याप्त रुप में विकसित किया है, 12 कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषि प्रौद्योगिक सूचना केन्द्र, किसान वार्ता केन्द्र, कृषि मौसम विज्ञान सलाहकार सेवा के माध्यम से कृषक प्रशिक्षण, प्रक्षेत्र परिक्षण, अगली पंक्ति प्रदर्शन,

Laghu Sinchai Yantra

किसान मेला, स्थानीय समाचार पत्रों में प्रकाशन, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन वार्तालाप, मोबाईल एप्प पर आधारित सलाहकार सेवा इत्यादि कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं।

2017–18 में महत्वपूर्ण प्रसार कार्यकलापों की झलक

क्र.सं.	प्रसार कार्यकलाप	कार्यकलापों की संख्या/लाभार्थी
1	किसानों /ग्रामीण युवा प्रक्षेत्र महिलाओं का प्रषिक्षण	41500
2	किसान मेला	1
3	प्रथम पंक्ति प्रदर्षन	3500
4	प्रक्षेत्र परिक्षण	60

महत्वपूर्ण पारितोषिक/उपलब्धियाँ

2017–18 में विश्वविद्यालय ने 41 पारितोषिक अर्जित किंए हैं जिसमें से कुछ नीचे अंकित किए गए हैं।

1. डा. अब्दुस सत्तार, सहायक प्राध्यापक व नोडल पदधिकारी को सर्वश्रेष्ठ पी. एच. डी. ग्रंथ पुरस्कार, अवार्ड।
2. डा. रेमेष चन्द्र श्रीवास्तव, कुलपति, रा. प्र. के. कृ. वि., पूसा को निम्नलिखित पुरस्कारों और सम्मानों से नवाजा गया।
   - क. हायर एडुकेषन लीडरषीप अवार्ड।
   - ख. ई.–देवांग मेहता नेषनल एडुकेषन अवार्ड।
   - ग. लाईफटाईम एचीवमेंट अवार्ड (अंडमान साईंस एसोसिएषन)।
   - घ. लाईफटाईम एचीवमेंट अवार्ड ड्येरिंग (इन्टरनेषनल सेमिनार ऑन एग्रीकल्चर एण्ड फूड फॉर इन्कलुसिव ग्रोथ एण्ड डेवलपमेंट एट सी. एस. आई. आर.–एन. बी. आर. आई., लखनउ)।
   - ड. द रविन्द्रनाथ टैगोर मेमोरियल लेक्चर (2–3 फरवरी, 2018) (द इन्सटीच्युषन ऑफ इन्जीनियरर्स (इंडिया))।
   - च. जी. आई. एस. एल. फेलॉषिप – 2017 (28 मई, 2017) (आउटस्टैंडिंग कन्ट्रीब्यूषन्स एण्ड कमीटमेंट टू फरदरेंस ऑफ एग्रीकल्चर इन्क्लुडिंग हार्टीकल्चर बॉय कनफेडरेषन ऑफ हार्टीकल्चर एसोसिएषन ऑफ इंडिया)।

3. डा0 अशोक कुमार सिंह, प्राध्यापक सह मुख्य वैज्ञानिक, रा.प्र.के.कृ.वि., फेलो ऑफ इंडियन सोसायटी ऑफ एक्सटेंषन एडुकेषन (आई.एस.ई.ई.)।

4. डा. रामाग्या ठाकुर और सहयोगी को सर्टिफिकेट ऑफ रिकॉग्नीषन फॉर डेवलपिंग लैण्डमार्क वैरायटीज ऑफ राईस (बी. आर.–8, बी. बार.–34 एण्ड सीता) (इंडियन सोसायटी ऑफ जेनेटिक्स एण्ड प्लांट ब्रिडींग, नई दिल्ली ।

5. शंकर झा, एस.एस. प्रसाद, एस.पी. सिंह. एम.पी. सिंह और आर. सी. श्रीवास्तव को नैषनल कॉन्फेंस ऑन आर्गेनिक वेस्ट मैनेजमेंट फॉर फूड एण्ड इनवारयनमेंटल सिक्युरिटी हेल्ड (इंडियन इन्सटीच्युट ऑफ स्वायल साईंस, भोपाल–8–10 फरवरी, 2018) द्वारा श्रेष्ठ पोस्टर पुरस्कार।

आधारभूत संरचना विकास

षिक्षकों/वैज्ञानिकों को आदर्ष षैक्षणिक माहौलउपलब्ध कराने हेतु परिसर में शैक्षणिक आधारभूत संरचना के आधुनिकीकरण का कार्य प्रारंभ किया गया है। सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पी. एच. डी. कार्यक्रमों के संचालन हेतु क्लास रूम को स्मार्टक्लासरुम में परिवर्तित किया गया है ताकि क्लास रूम षिक्षण की गुणवत्ता एवं प्रभाव को बढ़ाया जा सके। विश्वविद्यालय द्वारा विद्यापति सभागार के जीर्णोंधार और आधुनिकीकरण, परिसर के सड़कों पर विद्युतीकरण एवं सौन्दर्यीकरण, शैक्षणिक भवनों का जीर्णोधार, प्रयोगषाला, कक्षाओं, छात्रावासों और आवासीय भवनों के जीर्णोधार तथा स्ट्रीट बिजली इत्यादि का कार्य भी प्रगति पर है।

विश्वविद्यालय प्रक्षेत्र में सिंचाई के आधारभूत संरचना का विकास

विष्वविद्यालय प्रक्षेत्र में भूमि के अन्दर पाईप लाईन से सिंचाई की व्यवस्था का कार्य प्रगति पर है। इस सुविधा के द्वारा जहाँ सिंचाई की गुणवत्ता को एक तरफ सुरक्षित किया जा सकता है, वहीँ समय पर सिंचाई व्यवस्था उपलब्ध कराई जा सकती है। विष्वविद्यालय प्रक्षेत्र के कुछ ट्यूबबेल्स को सौर पंपिंग प्रणाली के साथ जोड़ा गया है जो आर्थिक बचत के साथ किसानों को ग्रीन ऊर्जा प्रयोग के प्रति जागरूक करता है।

Smart Class Room

प्रशासनिक पहल

विष्वविद्यालय द्वारा केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के सुदृढ़ीकरण हेतु में एक कार्यपालिका समिति का गठन किया गया तथा विभिन्न अध्यादेशों के माध्यम से विद्वत परिषद, अनुसंधान परिषद, प्रसार षिक्षा परिषद, प्रबंध परिषद, वित्त समिति इत्यादि का गठन किया ।

कुड़ा कर्कट प्रबंधन पहल

विष्वविद्यालय पूर्णतः आवासीय होने के कारण इसके बड़े परिसर में सैकड़ो विद्यार्थी, शैक्षणिक, तकनीकी कर्मचारी, जिनकी संख्या करीब 5000 है, 750 विभिन्न श्रेणी के आवासों एवं छात्रावासों में रहते है तथा बिजली, पानी, रसायनो इत्यादि का प्रयोग करते है, जिससे बहुत बड़ी मात्रा में कूड़ा कर्कट प्राप्त होता है, जिसे बूढी गंडक नदी के किनारे डंप किया जाता है। इससे न केवल जल प्रदुषण, बल्कि वायु प्रदुषण का खतरा भी बना रहता है। उपरोक्त तथ्य को ध्यान में रखते हुए अपषिष्ट प्रबंधन कार्यक्रम के रूप में14 अगस्त 2017 को एक पायलट परियोजना कीषुरुआतकी गई। कुड़ा कर्कटों एवं गंदगियों को एकत्रित करने के लिए हरा (बायोडिग्रेडेबुल) एवं पीला (नन बायोडिग्रेडेबुल) डब्बो की आपूर्ति सभी आवासधारकों को की गई। इस दिषा में जागरुकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। विभिन्न प्रकार से प्राप्त किए गए

कूड़ा–करकटों को ट्रॉली के माध्यम से एकत्रित कर वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन इकाई में जमा कर दिया जाता है, जहाँ कम्पोस्टिंग बायोवेस्ट को अन्य नॉन कम्पोस्टिंग वेस्ट से अलग कर दिया जाता है। वर्मी कम्पोस्ट खाद कूड़ा–करकट और गाय के गोबर को बराबर में मिलाकर ढ़ेर (विंड्रोज) बनाया जाता है। अर्थ वर्म, कीड़े–मकोड़े (एसेनिया फेटीडा, यूरोड्रीलस इयूजेनिक, पेरीयोनक्स एक्सकेवेटस) प्रति 02 कि. ग्रा. पर टन, कम नमी और तापमान में तैयार किया जाता है। खाद बनाने की अवधि में नियमित रुप से नमी और तापमान को उचित ढ़ग से बनाये रखा जाता है, जिससे किसानोपयोगी खाद तैयार की जाती है। 08–10 फरवरी, 2018 को भारतीय मृदा विज्ञान संस्था, भोपाल में आयोजित खाद्य एवं पर्यायवरण सुरक्षा के लिए एक राष्ट्रीय सम्मेलन में विश्वविद्यालय परिसर के कूड़–कर्कट प्रबंधन रणनीति एक नई पहल पर पोस्टर प्रस्तुत किया गया, जिसे उक्त सम्मेलन में सर्वोत्तम पोस्टर अवार्ड से नवाजा गया।

प्रकाशन

वर्ष 2017–18 में विश्वविद्यालय द्वारा 187 अनुसंधान लेख, 05 बुक चैप्टर, 26 लोकप्रिय लेख तथा 23 लीफलेट प्रकाषित किए गए। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा स्थानीय अखबारों में काफी संख्या में लेख भीप्रकाषित किये गये।

विश्वविद्यालय का अपना प्रकाषन प्रभाग है जो किसानों की आवष्यकता को ध्यान में रखते हुए मासिक पत्रिका–"आधुनिक किसान" प्रकाषित करता है तथा "त्रैमासिक समाचार पत्र" विष्वविद्यालय की उपलब्धियों को दर्षाते हुए प्रकाषित की जाती है। इसके अलावे विभिन्न फसलों के तकनीको, किसानों के कार्यकलापों जैसे गौ पालन, मूर्गी पालन, बकरी पालन, मधुमक्खी पालन तथा कृषि वानिकी के सबंध में एक वार्षिक प्रकाषन **“किसान डायरी"** के नाम से प्रकाषित की जाती है।

विश्वविद्यालय पुस्तकालय

शिक्षकों, वैज्ञानिकों, प्रसार षिक्षा विषेषज्ञों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों की आवष्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय में एक बड़ा पुस्तकालय स्थापित किया गया है। वर्ष 2017–18 में विश्वविद्यालय द्वारा 73,901 पुस्तके/ ई–बुक्स, (कैब एबसट्रेक्टस का सी. डी. रोम डाटाबेस, क्रोप सी. डी., कैबपेस्ट सी. डी., एग्रीस सी. डी., एग्रीकोला, कैबसेक, फूड एण्ड हम न्यूट्र सी. डी. जैसे) पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराया गया। इस वर्ष पुस्तकालय में कुल 19,304 आगन्तुक आए। विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा कैब सेवा, फोटोकॉपीयर सेवा, कम्प्यूटर प्रिंटीग सेवा, सन्दर्भ एवं प्रलेखन सेवाएँ, एवं सेरा जैसेअन्य सुविधाएँ भीउपलब्ध कराया जाता है।

Recycling of household waste

खेल–कूद

विद्यार्थियों के छात्रों में शरीरिक, मानसिकस्वास्थ व अनुषासन को विकसित करने हेतु विश्वविद्यालय में खेल–कूद की सारी व्यवस्थाएँ की गई हैं। विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2017–18 के दौरान 9–12 अगस्त, 2017 के बीच अन्तर महाविद्यालय वॉली बॉल, बैडमिन्टन, टेबुल टेनिस, फुटबॉल प्रतियोगिता और एथलेटिक एण्ड स्पोर्टस मिट 20–22 जनवरी, 2018 को आयोजित किया गया। इसके अलावे, विश्वविद्यालय के 05 छात्र और 06 छात्राओं ने 30 जनवरी – 03 फरवरी, 2018 को कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बैंगलोर में आयोजित 18वें अखिल भारतीय अन्तर कृषि विश्वविद्यालय स्पोर्टस एण्ड गेम्स मीट (2017–18) में सफलता पूर्वक भाग लिया।

राजस्व अर्जन

विष्वविद्यालय राजस्व अर्जन हेतु विभिन्न कार्यकलापों यथा बीज उत्पादन, पौधा उत्पादन, वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन, बॉयोखाद उत्पादन को संचालित करता आ रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा चावल, गेहूँ, मकई, तिल, दाल और तेलहन के 453 क्विंटल प्रजनन बीज और 1152.81 क्विंटल आधार बीज उत्पन्न किया गया। इसके अलावे मधु के बिक्री से 52,200 रु., बॉयोफर्टिलाईजर के विक्रय से 2.84 लाख राजस्व अर्जित कियागया । विश्वविद्यालय द्वारा उच्च गुणवत्ताकी उद्यान फसलें विकसित की गई जिसके विक्रय से 13,41,520 रु. का राजस्व अर्जित हुआ। विश्वविद्यालय ने अपने विभिन्न इकाईयों से 4.46 करोड़ रु. काकुल राजस्व एवं चक्रिय खाता के माध्यम से 10.76 लाख राजस्व अर्जित किया।

वार्षिक लेखा

विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2017–18 में 4477.62 लाख बिहार सरकार से, 1203.95 लाख आइ0 सी0 ए0 आर0 से, 473. 69 लाख विश्वविद्यालय के आंतरिक स्त्रोत से तथा 8200.00 लाख कृषि अनुसंधान एवं षिक्षा विभाग, भारत सरकार नई दिल्ली सेबजट आवंटन प्राप्त हुआ। इस प्रकार विश्वविद्यालय कोवर्ष 2017–18 में कुल राषि 14,355.26 लाख रुपये प्राप्त हुआऔर सभी राषियों को उक्त वर्ष की अवधि में उचित ढ़ंग से उपयोग किया गया।

A Glimpse of Inter College Athletic and Sports Meet (2017-18)

वित्तीय सारांश

(रु. करोड़ में)

क्र.सं.	विवरणी	आय	व्यय
1	राज्य योजना / गैर योजना	44.78	44.78
2	आई.सी.ए.आर. (ए.आई.सी.आर.पी. / के.भी.के.)	12.04	12.04
3	विश्वविद्यालय से प्राप्त आय (अन्य)	4.73	4.73
4	डेयर, नई दिल्ली	82.00	82.00
	कुल	**143.55**	**143.55**